## 1.1 State experiences: Monitoring and Support: Bihar

### मॉनीटरिंग एवं सपोर्ट

### मॉनीटरिंग एवं सपोर्ट का प्रतिवेदन

एसएसआरपी फाउंडेशन कैंप का संचालन 9 विद्यालयों में सम्पन्न हुआ। इन सभी विद्यालयों में एसएसआरपी कार्यक्रम का अनुश्रवण एवं अनुसमर्थन किया गया। अनुश्रवण एवं अनुसमर्थन के क्रम में निम्न तथ्य उभर कर सामने आए।

#### सामान्य विवरण

एसएसआरपी कार्यक्रम के अंतर्गत शामिल सभी 9 विद्यालयों में नामांकित कुल विद्यार्थियों की संख्या 2175 थी। विभिनन तिथियों को किए गए अनुश्रवण एवं अनुसमर्थन के क्रम में इन सभी विद्यालयों में लगभग 45–50 प्रतिशत शिक्षार्थी शामिल थे।

सामान्यतः इस कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित विद्यालयों में गणित, विज्ञान एवं भाषा के नामित शिक्षक थे। केवल राजकीयकृत उच्च विद्यालय, चिरैयांटांड में गणित एवं विज्ञान की गतिविधियों के लिए एक ही शिक्षिका थी।

अधिकांश विद्यालयों में भवन एवं वर्गकक्ष की उपलब्धता एवं उपयोग बेहतर स्थिति में था। कुछ विद्यालयों, यथा – राजकीयकृत विद्यालय, जल्ला, पटना सिटी, राजकीयकृत उच्च विद्यालय चिरैयांटांड, रा0 मा0 विद्यालय, बोरिंग रोड में अपेक्षित वर्ग–कक्ष की कमी थी। जबकि घनश्याम बालिका माध्यमिक विद्यालय, खगौल में विद्यालय भवन निर्माणाधीन था। सभी विद्यालयों में परिसर एवं वर्गकक्ष की साफ–सफाई समुचित नजर आ रही थी।

एसएसआरपी कार्यक्रम के प्रति सभी विद्यालयों के प्राचार्य/प्राचार्यों का दृष्टिकोण सकारात्मक था। उनके स्तर से इस कार्यक्रम में सम्मिलित शिक्षिक/शिक्षिकाओं एवं शिक्षार्थियों को अपेक्षित सहयोग किया जा रहा था। प्रायः सभी विद्यालयों में उनके द्वारा किये गए शिड्यूल के अनुसार या थोड़े परिवर्तन के साथ कार्यक्रम को संचालित किया जा रहा था। सभी विद्यालय प्रधान द्वारा इसे विद्यालय रूटीन में शामिल कर कार्यान्वित कराया जा रहा था।

विद्यालय के अन्य शिक्षकों से भी बातचीत करने पर यह पता चला कि उनमें भी इस कार्यक्रम के प्रति उत्सुकता था। कुछ विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा यह भी आग्रह किया गया कि इसे अन्य विषयों के लिए भी किया जाना चाहिए।

सामान्यतः सभी चयनित विद्यालयों में वर्ग 9 एवं 10 में नामांकित छात्रों की संख्या बहुत अधिक थी। उपस्थिति का प्रतिशत अधिकांश विद्यालयों में अच्छा था। वर्ग 9 के साथ साथ 10 के शिक्षार्थियों में भी इस कार्यक्रम और गतिविधियों के प्रति उत्सुकता नजर आ रही थी।

#### गतिविधियाँ

प्रायः सभी चयनित विद्यालयों में एसएसआरपी कार्यक्रम हेतु गतिविधियों का वर्ग–कक्ष में संचालन हो रहा था। जैसा कि गतिविधियां Experience, Reflection, Application एवं Consolidation (ERAC) चार आयामों पर संरचित की गई थी। वर्ग–कक्ष अवलोकन एवं अनुश्रवण के क्रम में यह स्पष्ट हुआ कि गतिविधियों का Experience तथा Reflection भाग ठीक ढंग से संचालित हो रहा था, जबकि Application व Consolidation भाग को और भी संगठित एवं संरचित रूप से किए जाने की आवश्यकता थी। शिक्षार्थी दी गई गतिविधियों से खुद को जोड़ तो पा रहे थे, लेकिन उसे आगे ले जाने हेतु उनके साथ और प्रयास की जरूरत थी। प्रायः जिन गतिविधियों में Experience भाग को अच्छी तरह संचारित किया गया वे गतिविधियां अधिक आकर्षक और प्रभावी ढंग से संचालित हो पा रही थीं। भाषा, गणित और विज्ञान के अधिकांश गतिविधियों के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं शिक्षार्थियों की बहुत ही सकारात्मक प्रतिक्रिया थी। जैसे – गणित में पैटर्न, गुणा संबंधी अवधारणा, 2डी एवं 3डी ज्यामितीय आकृतियों की समझ, संख्याओं की समझ आदि। विज्ञान में सूचीकरण, वर्गीकरण, सारणीयन, मात्रक की समझ, अनुमान लगाना, गतिज ऊर्जा, गुरूत्वाकर्षण का अनुमान एवं असर, जड़ता, घर्षण, भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन आदि। भाषा में शब्द निर्माण, अनुच्छेद, कहानी निर्माण एवं कथन, पत्र–लेखन आदि।

#### शिक्षार्थी

उपरोक्त गतिविधियों के प्रति शिक्षार्थियों की प्रतिक्रिया एवं सहभागिता सकारात्मक थी। साथ ही वे उत्सुकता के साथ न केवल स्वयं भाग ले रहे थे, बल्कि अपने मित्रों का भी सहयोग कर रहे थे। शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा शिक्षार्थियों

को स्वयं कर के सीखने का पर्याप्त अवसर दिया जा रहा था। शिक्षार्थी गतिविधियों से संबंधित अपनी जिज्ञासा प्रश्नों के माध्यम से प्रकट कर रहे थे। शिक्षर्थी परस्पर विमर्श से अपनी जिज्ञासा, रखे गए प्रश्नों का हल ढूंढ रहे थे, तो दूसरी ओर उनके द्वारा रखे गए प्रश्न उनको स्वयं ही सोचने के लिए विवश कर रहे थे। जेसे गुणा की दी गई गतिविधि से शून्य को शून्य से या शून्य को अंग से कैसे गुणा किया जाए। स्वयं से नए पैटर्न ढूंढना या बनाना, वर्गीकरण के विभिनन आधारों को ढूँढना, सूचीकरण के अलग–अलग तरीके क्या हो सकते हैं, सारिणी का सरल स्वरूप क्या हो सकता है, आदि आदि। शिक्षार्थियों द्वारा निर्मित कहानी, अनुच्छेद में उनकी सोच और कल्पनाशीलता दिख रही थी।

संचालित अधिकांश गतिविधियों का विवरण एवं संबंधित कार्य वर्ग कक्ष में उपस्थित शिक्षार्थियों की अभ्यास पुस्तिका में अंकित था। शिक्षक/शिक्षिकाओं के स्तर से कुछ विद्यालयों में उनका दस्तावेजीकरण किया जा रहा था। शिक्षक/शिक्षिका संचालित गतिविधियों के आधार पर शिक्षार्थियों के सीखने का आकलन कर रहे थे। साथ ही शिक्षर्थी भी स्वयं अपना एवं अपने साथियों का आकलन कर रहे थे, उनके सुधार हेतु अपेक्षित सुझाव दे रहे थे।

शिक्षार्थियों से बातचीत के क्रम में स्पष्ट हुआ कि गतिविधियां जिन अवधारणाओं या तथ्यों से जुड़ी हुई हैं, उनके बारे में कुछ शिक्षार्थी थोड़ी जानकारी रखते तो थे लेकिन गतिविधियों को करने के बाद उनकी समझा और भी बेहतर हुई। अन्य शिक्षार्थियों की भी समझ बनी। उनको मजा आ रहा था। वे अपने–आप को सक्रिय और संलग्न महसूस कर रहे थे। शिक्षार्थियों को सामान्य वर्ग–कक्ष पाठ्य पुस्तक अधिगम से अलग अधिक रूचिक और नया लग रहा था। शिक्षार्थियों के अनुसार वे चीजों को आसानी से सीख और समझ रहे हैं, स्वयं करने का अवसर मिल रहा है, महत्वपूर्ण रूप से उनके अपने अनुभवों को साझा करने का मौका मिल रहा है। अनुश्रवण के क्रम में यह देखा गया कि शिक्षार्थी गतिविधि के संचालन के दौरान और बाद में भी संबंधित गतिविधि एवं पूर्व में संचालित गतिविधियों के बारे में बातचीत कर रहे थे। अपने अनुभवों को साझा कर रहे थे।

### शिक्षक/शिक्षिका

प्रायः यह देखा गया कि शिक्षिका/शिक्षिका कुछ गतिविधियों में सहज थे। गतिविधियों का संचालन आकर्षक और सहभागितापूर्ण ढंग से कर पा रहे थे। जबकि कुछ गतिविधियां सामान्य वर्ग–कक्ष की तरह संचालित हो रही थीं। यथा – व्याख्यान, प्रश्न उत्तर आदि द्वारा। शिक्षक/शिक्षिकाओं का माना था कि गतिविधियां उपयुक्त एवं रोचक हैं, लेकिन इनको संचालित करने में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। यथा –

- वर्ग–कक्ष में शिक्षार्थियों की अधिक संख्या
- वर्ग–कक्ष एवं भवन की कमी (कुछ विद्यालय)
- गतिविधियों से संबंधित संसाधनों का अभाव
- गतिविधि सापेक्ष अधिगम सामग्री की कमी
- गतिविधियों के संचालन हेतु अभ्यास के लिए समय न मिल पाना
- इस कार्यक्रम की प्रशिक्षण अवधि का कम होना
- ERAC की समझ हेतु और समय एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता
- शिक्षार्थियों की उपस्थिति की निरंतरता
- इस कार्यक्रम के साथ–साथ अन्य विद्यालीय कार्यों का संचालन
- अन्य शिक्षक/शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण

शिक्षक/शिक्षिकाओं ने बताया कि कुछ चुनौतियों का सामना उन्होंने परस्पर प्रयास के द्वारा किया। जैसे गतिविधियों को समझना, गतिविधियों की प्रस्तुति और सामग्री में कुद फेर बदल, शिक्षार्थियों का Motivation एवं वातावरण निर्माण, परस्पर सहयोग से अधिग समग्रियों की व्यवस्था, पूर्व तैयारी, वर्ग–कक्ष प्रबंधन आदि आदि।

### नवाचार (Innovation)

एसएसआरपी कार्यक्रम के अनुश्रवण के क्रम में विभिन्न विद्यालयों में कुछ नवाचार भी नजर आए। यथा –

### टीम टीचिंग

राम लखन सिंह यादव उच्च माध्यमिक विद्यालय, पुनाईचक, राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय, जल्ला में शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा वर्ग–कक्ष में गतिविधियों के संचालन में साथी शिक्षक/शिक्षिकाओं का सहयोग लिया जा

रहा था। इससे न केवल गतिविधियों के संचालन में सहजता हो रही थी, बल्कि वर्गकक्ष प्रबंधन, समूह में तथा व्यक्तिगत सीखने के अवसरों को व्यवस्थित करने में मदद मिल रही थी। साथ ही साथ शिक्षक/शिक्षिकाओं का भी संवर्धन हो रहा था।

### शिक्षर्थियों का समूहीकरण

राजकीय कन्य माध्यमिक विद्यालय, जल्ला में शिक्षार्थियों का समूहीकरण उनकी दक्षता और क्षमता के आधार पर किया गया। इस हेतु शिक्षार्थियों का विद्यालय स्तर पर बेस लाइन टेस्ट किया गया। उनके प्रदर्शन के आधार पर उनके तीन स्तर में चिन्हित किया गया। पुनः तीनों स्तर के शिक्षार्थियों को लेकर छोटा समूह बनाया गया। उनके एक साथ बैठाया गया। इस प्रकार के समूहीकरण से सीखने की प्रक्रिया में सभी की बेहतर ढंग से सहभागिता हो पा रही थी। अधिक क्षमता वाले शिक्षार्थी अपने समूह के अन्य साथियों की मदद कर रहे थे, उनको कार्य करने का मौका दे रहे थे, समूह में किए जाने वाले कार्यों की जिम्मेवारी ले रहे थे। यथा आवश्यक अपनी समझ का परिमार्जन स्वयं तथा शिक्षक/शिक्षिकाओं के सहयोग से कर रहे थे।

### साथी शिक्षक/शिक्षिकाओं का प्रशिक्षण एवं उन्मुखकीकरण

इंदर सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय, गंगस्थली में एसएसआरपी प्रशिक्षण एवं उन्मुखीकरण कार्यशाला में शामिल शिक्षक/शिक्षिकाओं ने विद्यालय के अन्य शिक्षक/शिक्षिकाओं को भी जानकारी दी, प्रशिक्षिक किया तथा उनक सहयोग ले रहे थे।

### दस्तावेजीकरण

राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय, जल्ला में प्रायः सभी शिक्षार्थियों की अभ्यास पुस्तिका में संचालित गतिविधियों का समेकन चार्ट पेपर पर किया गया था।

### नई गतिविधि

इंदर सिंह उ0 माध्यमिक विद्यालय, शेरपुर में शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा कुछ नई गतिविधियों का विकास और संचालन किया जा रहा था। महत्वपूर्ण रूप से उन गतिविधियों में ESRP ERAC का पालन करने का प्रयास किया जा रहा था। वस्तुतः SSRP कार्यक्रम सभी चयनित विद्यालयों में संचालित हो रहा था। कुछ विद्यालयों में अधोसंरचनात्मक या शिक्षक/शिक्षिकाओं की कमी जैसे बाधाएं प्रभावित कर रही थी। लगभग सभी विद्यालयों में यह कार्यक्रम पूरी गंभीरता से संचालित हो रहा था। अनुश्रवण एवं अनुसमर्थन के क्रम में जो तथ्य उभर कर आए उस क्रम में निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं –

- संबंधित शिक्षक/शिक्षिकाओं को इस कार्यक्रम विशेष रूप से गतिविधियों के संचालन संबंधी और भी गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इससे शिक्षक/शिक्षिकाओं में गतिविधि के साथ साथ ERAC की अवधारणा बेहतर ढंग से स्पष्ट हो सकेगी।
- बेहतर परिणाम हेतु गतिविधियों से संबंधित शिक्षण अधिगम सामग्री की उपलब्धता अपेक्षित है।
- शिक्षार्थियों के अनुपात में शिक्षक/शिक्षिकाओं का चयन एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था।
- प्रत्येक विद्यालय में सभी विषयों में एक से अधिक शिक्षक/शिक्षिकाओं का चयन एवं गहन प्रशिक्षण
- अकादमिक सत्र के आरंभ में इस कार्यक्रम को किया जाय।
- कुछ गतिविधियां वर्ग 9 की अवधारणाओं/पाठ्यपुस्तकों से प्रत्यक्षतः जुड़ी होनी चाहिए, जिससे शिक्षार्थी निरंतरता के साथ अपने आप को विषय वस्तु से जोड़े रख सकेंगे।
- संबंधित शिक्षक/शिक्षिकाओं में गतिविधि निर्माण क्षमता के संवर्धन हेतु उपयुक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था।
- विभिन्न विद्यालयों में अपनाए गए नवाचार को इस कार्यक्रम में अपनाना।

◆◆◆